इतिहास

धर्म और विज्ञान का बंदर मुकदमा

डॉ. सुशील जोशी

अक्सर हम एक ही तरह के मुद्दों से बार-बार लगातार जूझते रहते हैं। कभी लोग बदल जाते हैं, तो कभी स्थान, कभी काल। मसलन जो किस्सा मैं कहने जा रहा हूं वह 1925 के अमरीका का है। स्थान है एक छोटा कस्बा डेटन, टेनेसी प्रांत। कस्बा भी क्या इसे गांव कहना ही बेहतर होगा - कुल आबादी 1800 होगी। मगर यहां की अदालत में एक ज़ोरदार मुकदमा लड़ा जाने वाला है जो आगे चलकर बंदर मुकदमे के नाम से विख्यात होगा और इसे बीसवीं सदी के सबसे महत्वपूर्ण मुकदमों में गिना जाएगा। मामला सिर्फ इतना है कि एक 24 वर्षीय स्कूल शिक्षक जॉन स्कोप्स ने अपनी कक्षा में जैव विकास का डार्विन सिद्धांत पढ़ाया है और ऐसा करना टेनेसी प्रांत के कानून के खिलाफ है। स्पष्ट है कि शिक्षा को हर देश काल में विचारधारा फैलाने का एक अहम साधन समझा गया है। मगर कहानी आगे बढ़ाने से पहले थोड़ी पृष्ठभूमि देना उचित होगा।

अगर बन्दर वोट दे सकते तो इस प्रस्ताव को बहुत समर्थन मिलता

1920 में अमरीका में एक लहर सी चली थी। इस लहर पर सवार थे बुनियादपरस्त लोग जो यह मानते थे कि बाइबल का अक्षरशः पालन होना चाहिए और डार्विन का जैव विकास सिद्धांत बाइबल के खिलाफ है; लिहाज़ा इसे स्कूलों में नहीं पढ़ाया जाना चाहिए। उस दौरान कई प्रांतों में इस आशय के विधेयक पारित हुए। डार्विन को स्कूल से बाहर कर दिया गया। टेनेसी ऐसे विधेयक पारित करने वाले प्रांतों में अग्रणी था। यहां कानून निर्माता बटलर ने जैव विकास निषेध कानून बनाया था और इसे बटलर कानून कहा जाता था। इस बुनियादपरस्त लहर को देखते हुए अमरीकी नागरिक आज़ादी संगठन (ए.सी.एल.यू.) ने इसे अभिव्यक्ति की आज़ादी पर एक खतरा मानते हुए घोषणा की कि यदि कोई शिक्षक इस कानून का उल्लंघन करेगा तो संगठन उसे कानूनी सहायता प्रदान करेगा। इससे प्रेरित होकर डेटन के कुछ उदारवादी लोगों ने सोचा कि यदि किसी तरह यह उल्लंघन उनके कस्बे में हो जाए तो बाकी जो कुछ हो, कस्बा मशहूर हो जाएगा। उन्होंने एक शिक्षक (जॉन स्कोप्स) से बात की। जॉन स्कोप्स ने उन्हें बताया कि जैव विकास और डार्विन की बात किए बगैर जीव विज्ञान पढ़ाया ही नहीं जा सकता। उसने तो यहां तक कहा कि सभी शिक्षक अपनी कक्षा में *'ए सिविक बायोलॉजी'* नामक किताब पढ़ाते हैं और उसमें डार्विन का सिद्धांत समझाया गया है। स्कोप्स से पूछा गया कि क्या वह यह बात अदालत में स्वीकार करेगा, जिस पर उसने हामी भर दी। फिर क्या था, अगले दिन ही 'एफ.आई.आर.' दर्ज की गई और उसकी गिरफ्तारी हुई और उस पर आरोप लगाया गया कि उसने जैव विकास पढ़ाकर बटलर कानून का उल्लंघन किया है।

इस बात की सूचना ए.सी.एल.यू. को दी गई और उन्होंने अपनी ओर से एक वरिष्ठ वकील क्लेरेंस डैरो को रवाना कर दिया। वैसे डेटन के उक्त उदारवादी समूह की